Dr. Keerti Kumari
Asst Prof (अतिथि)
Deptt of Psychology
S.R.A.P. College, Barachakia, East Champaran
(A constituent unit of B.R.A. Bihar University Muzaffarpur)

Subject – Psychology
Topic – Topographical aspect of mind.
Class – B.A Part-II (Hon) II Second Paper
Day – Tuesday Day
Date – 07/02/23
Period – 2nd
Contact No – 9801466117

---

प्रश्न – मन के आकारात्मक (स्थलाकृतिक) पहलुओं का वर्णन करें?

अथवा

चेतन, अर्द्ध चेतन एवं अचेतन के भेद करें।

– Describe the Topographical aspects of mind?

उत्तर – मन अस्तित्व का स्थान रूप रेखीय पहलू :- इदम्, अहम् पाप, अहम् का संबंध मन का चेतन, अचेतन या अवचेतन स्तर पर हो सकता है। फ्रायड ने अचेतन, अवचेतन व चेतन को मन का स्थल रूपरेखीय पहलू कहा है।

मन की संरचना

गत्यात्मक पहलू — इदम्, अहम्, पराहम्

स्थल रूप रेखीय पहलू — चेतन, अवचेतन, अचेतन

इसे चेतन स्तर भी कहते हैं। फ्रायड ने इन तीनों स्तरों में से अचेतन की अधिक विस्तृत खोज की है। नीचे हम इन तीनों की समुचित व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

1. चेतन – चेतना का सम्बन्ध वर्तमान से होता है। यह मन का वह स्तर है जहाँ से हम अपने अतीत के अनुभव, भाव, विचारों, परिस्थितियों, घटनाओं आदि स्मरण में लाते हैं। जे० एफ० ब्राउन के शब्दों में "फ्रायड के अनुसार अचेतन मन का वह भाग जो कि तात्कालिक ज्ञान से जुड़ा है" चेतन मन के कई उदाहरण हमारे दैनिक जीवन में मिलते हैं। जैसे परीक्षा भवन में विद्यार्थी प्रश्न का उत्तर लिखता है क्योंकि उसे उत्तर सामने होने का ज्ञान होता है।

ajanta PRODUCTS Officer

2. अवचेतन – 19 वीं शताब्दी के मानसिक अध्ययनों ...
के लिए कोई न कोई मानने का प्रयास किया जाता था। परन्तु 20 वीं शताब्दी में लोगों का ध्यान अवचेतन व चेतन प्रक्रमों की ओर गया। अवचेतन के सम्बन्ध में आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत! अग्रांकित सिद्धान्तों के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ।

(4) द्वि-मन सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त का प्रतिपादन थॉमसन हडसन ने किया था। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के दो मन होते हैं

1- वाह्यमन – objective mind
2. विषयगत मन – subjective mind.

इन दोनों की प्रकृति, गुण, प्रक्रियाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। इनका एक दूसरे पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। वाह्य मन का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा होता है जबकि विषयगत मन की जानकारी अन्तर्ज्ञान के द्वारा होता है। वाह्य मन में समान्य तर्क होता है जबकि विषयगत मन में एक विशेष प्रकार का होता है। वास्तव में हडसन का द्वि मन सिद्धान्त वैज्ञानिक नहीं है क्योंकि मन का विभाजन नहीं किया जा सकता है। वास्तव में द्वि मन उसके अनेक पक्ष होते हैं।

(5) चेतना सीमान्त दृष्टिकोण :- इस दृष्टिकोण के अनुसार अवचेतन व्यक्तिगत चेतन मन से हुआ है। सामान्यतया चेतन को दो भागों में बांटा जाता है। केन्द्रिय भाग तथा सीमान्त भाग। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जेम्स का कहना है कि सीमान्त भाग चेतना का घेरा है। अवचेतना भी इसी "चेतना के घेरे" का विस्तार है जिसमें विचार स्थित रहते हैं तथा इसी कारण ये किसी भी समय चेतन मन में प्रवेश पा सकते हैं।

अवचेतन के सम्बन्ध में उपर्युक्त दृष्टिकोण वास्तव में स्पष्ट रूप से वैज्ञानिक नहीं है। सम्बन्ध में सर्वाधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने का श्रेय फ्रायड को ही है। — अतः अवचेतना के बारे में कहा जाता है कि अवचेतन मन का वह भाग है जिसमें ऐसी इच्छाओं और विचार निहित रहते हैं जिनको प्रत्यावाहन किया जा सकता है।